Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Paper

तिब्बत लामा परंपरा और इसका राजनीतिक परिप्रेक्ष्य

प्रताप दान[1*]

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *प्रताप दान

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14912105

सारांश

तिब्बत में बौद्ध धर्म की स्थापना 7 वीं सदी में राजा सोंग्त्सेन गम्पो के शासनकाल में हुई। 8वीं सदी में गुरु पद्मसंभव ने तांत्रिक बौद्ध धर्म की नींव रखी, जिससे लामा परंपरा का विकास हुआ। 15वीं सदी में जे चोंखापा द्वारा स्थापित गेलुग पंथ ने दलाई लामा की संस्था को मजबूत किया। तिब्बत की लामा परंपरा न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह तिब्बत की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में भी गहरा प्रभाव रखती है। इस शोध पत्र का उद्देश्य लामा परंपरा के उद्भव, विकास, धार्मिक-सामाजिक प्रभाव, और तिब्बत-चीन संघर्ष में इसकी भूमिका का विश्लेषण करना है। इसके अलावा, समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इस परंपरा के प्रभाव पर भी प्रकाश डाला गया है। यह शोध-पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

Manuscript Info.

- ✓ **ISSN No:** 2584-184X
- ✓ **Received:** 10-01-2025
- ✓ **Accepted:** 11-02-2025
- ✓ **Published:** 23-02-2025
- ✓ **MRR:3(2):**2025;51-58
- ✓ **©2025, All Rights Reserved.**
- ✓ **Peer Review Process:** Yes
- ✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite

प्रताप दान. तिब्बत लामा परंपरा और इसका राजनीतिक परिप्रेक्ष्य. Indian J Mod Res Rev. 2025;3(2):51-58.

कुंजी शब्द: लामा परंपरा, तिब्बत, चीन, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य, दलाई लामा।

परिचय (लामा परंपरा)

आज दुनिया में कई धर्म, संस्कृतियाँ और परंपराएँ हैं, लेकिन मनुष्यों द्वारा बनाई गई इन सभी परंपराओं, रीति-रिवाजों और मान्यताओं का एक ही उद्देश्य है, जो है मानवता, शांति और भाईचारा का पाठ पढ़ाना। बौद्ध धर्म उन धर्मों में से एक है जो गौतम बुद्ध के साथ शुरू हुआ और अब दुनिया भर में इसके अनुयायी हैं। बौद्ध धर्म में बुद्ध के अलावा यदि किसी को सर्वोच्च दर्जा प्राप्त है तो वह हैं "दलाई लामा" जिनकी शुरुआत तिब्बत से मानी जाती है। दुनिया भर के विभिन्न देशों में विभिन्न धर्मों के बीच सर्वोच्च धार्मिक नेताओं को चुनने की प्रक्रिया बहुत भिन्न होती है। लेकिन इस तरह चुना गया तिब्बत के बौद्ध धर्म से जुड़े सर्वोच्च धार्मिक नेता दलाई लामा का. यह प्रक्रिया बहुत अलग और अनोखी है. दुनिया में कई धर्म मौजूद हैं और इन धर्मों में धार्मिक नेताओं या नेताओं के चयन की अलग-अलग परंपराएं और नियम हैं जिनके माध्यम से धार्मिक नेताओं का चयन किया जाता है। लेकिन तिब्बती बौद्ध धर्म के सर्वोच्च धार्मिक नेता दलाई लामा की चयन प्रक्रिया अन्य धर्मों की तुलना में बहुत अनोखी और अनोखी है। उनका चयन किसी चुनाव या परीक्षा के माध्यम से नहीं किया जाता है, बल्कि तिब्बती लोगों का मानना है कि उनके गुरु दलाई लामा कभी नहीं मरते, वह बस अपना शरीर छोड़ देते हैं और पुनर्जन्म लेते हैं। अतः उन्हें केवल हम खोज सकते हैं, लेकिन उनका चयन नहीं कर सकते हैं। तिब्बत में बौद्ध धर्म की स्थापना 7वीं सदी में राजा सोंग्त्सेन गम्पो के शासनकाल में हुई। उन्होंने बौद्ध धर्म को राज्य धर्म के रूप में अपनाया। इसके बाद 8वीं सदी में राजा त्रिसोंग देचेन ने भारत के महान बौद्ध आचार्य शांतिरक्षित और पद्मसंभव को तिब्बत आमंत्रित किया। इन दोनों आचार्यों ने तिब्बत में बौद्ध धर्म को स्थापित करने और उसे व्यवस्थित रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

निभाई।[1] तिब्बती लामा परंपरा बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के अंतर्गत एक विशिष्ट परंपरा है और धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। "लामा" शब्द संस्कृत के "गुरु" शब्द से आया है, जिसका अर्थ है आध्यात्मिक शिक्षक। लामा परंपरा न केवल धार्मिक जीवन का हिस्सा है, बल्कि तिब्बती सांस्कृतिक पहचान का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। तिब्बत में, लामा न केवल धार्मिक शिक्षक बल्कि आध्यात्मिक और सामाजिक मार्गदर्शक के रूप में भी काम करते हैं। तिब्बती बौद्ध धर्म के गेलुग या "येलो हैट" संप्रदाय के लोगों का मानना है कि प्रत्येक दलाई लामा बोधिसत्व अवलोकितेश्वर, महान करुणा का अवतार हैं। बौद्ध धर्म में, बोधिसत्व एक प्रबुद्ध व्यक्ति है जो मानवता की सेवा के लिए निर्वाण को स्थगित कर देता है।[2]

लामा परंपरा के प्रमुख पंथ:

तिब्बती बौद्ध धर्म में चार प्रमुख पंथ हैं, जिनमें से प्रत्येक का लामा परंपरा में अपना विशिष्ट स्थान और योगदान है:[3]-

1. न्यिंगमा पंथ:

न्यिंगमा पंथ तिब्बती बौद्ध धर्म के चार प्रमुख पंथों में से एक है। यह पंथ तिब्बती बौद्ध धर्म का सबसे प्राचीन पंथ माना जाता है और इसे "प्राचीन परंपरा" (न्यिंगमा का अर्थ है "पुराना" या "प्राचीन") के नाम से भी जाना जाता है। न्यिंगमा पंथ की स्थापना 8वीं सदी में तिब्बत में मानी जाती है। इस पंथ का उद्गम भारतीय बौद्ध धर्म के महान विद्वान और तांत्रिक गुरु पद्मसम्भव (गुरु रिनपोछे) के समय से जुड़ा है, जो 8वीं सदी में तिब्बत गए थे। गुरु पद्मसम्भव ने तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार किया और स्थानीय बौद्ध धर्म के साथ इसे समन्वित किया।

न्यिंगमा परंपरा "न्यिंगमा तंत्र" पर आधारित है, जिसमें बौद्ध तंत्र, ध्यान और योग की गहरी परंपराएं सम्मिलित हैं। इससे संबंधित प्रमुख ग्रंथों में निङ्गमा ग्युदबूम (न्यिंगमा तंत्र संग्रह) और जंगतेर (गुप्त खजाने की शिक्षाएँ) शामिल हैं। यह पंथ "दोजोंग चेनपो" (महासिद्धांत) के सिद्धांत पर आधारित है, जिसे "महायोग" का उच्चतम रूप माना जाता है।

न्यिंगमा पंथ अन्य तिब्बती पंथों की तुलना में अधिक लचीला है। इसमें औपचारिक संरचनाएं और अनुशासन अपेक्षाकृत कम हैं। इसमें भिक्षु (लामा), योगी और गृहस्थ अनुयायी शामिल होते हैं। न्यिंगमा पंथ से जुड़े कई प्रमुख मठ और स्थल हैं जिसमें प्रमुख रूप से सम्ये मठ (तिब्बत का पहला बौद्ध मठ) शामिल है। इसके अतिरिक्त भारत और नेपाल में भी न्यिंगमा परंपरा के केंद्र पाए जाते हैं जिनमें बोधगया और काठमांडू आदि शामिल हैं।

2. साक्य पंथ:

यह पंथ भी तिब्बती बौद्ध धर्म के चार प्रमुख पंथों में से एक है। इसका नाम "साक्या" (जिसका अर्थ है "फैली हुई भूमि" या "हल्की भूरी धरती") से लिया गया है, जो तिब्बत में साक्या मठ के आसपास के स्थान को संदर्भित करता है। यह पंथ तिब्बती बौद्ध धर्म की अनूठी शिक्षाओं और दर्शन का एक महत्वपूर्ण अंग है। इस पंथ की स्थापना 11वीं सदी में तिब्बती विद्वान खोन कुनचोग ग्यालपो (1034–1102) द्वारा की गई है। इस परंपरा से जुड़ा प्रमुख केंद्र साक्या मठ है, जो तिब्बत के शिगात्से क्षेत्र में स्थित है।

साक्य पंथ के प्रमुख आचार्यों में साक्य पंडिता (1182–1251) और उनके भतीजे फागपा (1235–1280) शामिल हैं। साक्य पंडिता ने भारतीय और तिब्बती बौद्ध दर्शन को एकीकृत किया और उन्हें साक्य परंपरा का महान विद्वान माना जाता है। फागपा को मंगोल साम्राज्य में धार्मिक और राजनीतिक अधिकार मिला, जिसने साक्य पंथ को तिब्बत में प्रमुख जगह दिलाई। 13वीं सदी में मंगोलों ने तिब्बत में साक्य पंथ का समर्थन किया। साक्य पंथ ने तिब्बत में प्रशासनिक और धार्मिक दोनों क्षेत्रों में नेतृत्व किया।

साक्य पंथ की शिक्षाएँ लामद्रे (मार्ग और फल) परंपरा पर आधारित हैं। लामद्रे शिक्षाओं में महायोग और सूक्ष्म तांत्रिक सिद्धांतों का समन्वय होता है। इसका उद्देश्य आत्मबोध और संपूर्णता को प्राप्त करना है। यह परंपरा सांसारिक अनुभवों और आध्यात्मिक मुक्ति के बीच संतुलन स्थापित करती है। साक्य पंथ में तंत्र का अभ्यास एक प्रमुख भूमिका निभाता है। इसमें विशेष रूप से हिरुक तंत्र और हेवज्र तंत्र का पालन किया जाता है।

साक्य पंथ भारतीय बौद्ध दार्शनिक परंपरा के प्रसंगिकता (मध्यमक) और योगाचार दोनों विचारधाराओं को स्वीकार करता है। इसमें तांत्रिक और सूक्ष्म ध्यान प्रक्रियाओं के साथ बौद्ध विज्ञान को जोड़ा गया है। इस पंथ का नेतृत्व साक्य परिवार के वंशानुगत लामा करते हैं। इसे साक्य त्रिनजिन कहा जाता है, जो आध्यात्मिक और प्रशासनिक प्रमुख होते हैं। साक्य मठ साक्य पंथ का मुख्यालय है। नेपाल, भारत, और भूटान जैसे देशों में भी इसके अनुयायी और मठ मौजूद हैं।

3. कग्यूपा पंथ:

कग्यूपा पंथ तिब्बती बौद्ध धर्म के चार प्रमुख पंथों में से एक है। इसे "मौखिक परंपरा" (कग्यू का शाब्दिक अर्थ "मौखिक शिक्षाओं की रेखा") कहा जाता है, क्योंकि इसकी शिक्षाओं को गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से मौखिक रूप से प्रेषित किया गया है। कग्यूपा पंथ ध्यान, तांत्रिक अभ्यास, और योग की गहन परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है।

कग्यूपा पंथ का मूल भारतीय बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध योगियों और तांत्रिक आचार्यों से है। इसके प्रमुख संस्थापक आचार्य तिलोपा (988–1069) और उनके शिष्य नारोपा (1016–1100) माने जाते हैं। नारोपा की शिक्षाओं को उनके प्रमुख शिष्य मारपा लोद्रो (1012–1097) ने तिब्बत में प्रचारित किया था।

गुरु शिष्य परम्परा के अंतर्गत मारपा के शिष्य मिलारेपा (1052–1135), जिन्हें महान योगी और कवि के रूप में जाना जाता है, ने कग्यूपा पंथ की शिक्षाओं को लोकप्रिय बनाया था। मिलारेपा के शिष्य गंपोपा (1079–1153) ने कग्यूपा पंथ की संरचना को व्यवस्थित किया और इसे एक मठीय प्रणाली में परिवर्तित किया।

गंपोपा की शिक्षाओं से कग्यूपा पंथ के कई उप-पंथ बने। प्रमुख शाखाओं में द्रुकपा कग्यूपा, कर्म कग्यूपा, और द्रिकुंग कग्यूपा शामिल हैं। इनमें कर्म कग्यूपा विशेष रूप से प्रसिद्ध है, क्योंकि इसके नेतृत्व में "कर्मापा" की परंपरा स्थापित हुई।

[1] अनुरुद्धा, आर. पी. (1959). एन इंट्रोडक्शन इनटू लामाइज्म: दी मिस्टिकल बुद्धिज्म, पृ.7-20.
[2] वही, पृ.7-20.
[3] वाडेल, एल. ऑस्टिन. (1985). बुद्धिस्म एंड लामाइज्म ऑफ़ तिब्बत, पृ.22-52.

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कग्यूपा पंथ महामुद्रा (महान मुहर) के दर्शन पर आधारित है, जो ध्यान और तंत्र के माध्यम से सत्य की अनुभूति का मार्ग है। इसकी शिक्षाएँ ध्यान के चार स्तरों (शामथ, विपश्यना, महासंधि, और महामुद्रा) पर केंद्रित हैं। इसमें विशेष रूप से "छः योग" (नारोपा की शिक्षा) का अभ्यास किया जाता है, जिनमें ध्यान, ऊर्जा नियंत्रण, और तांत्रिक योग शामिल हैं। कग्यूपा परंपरा में तंत्र और योग का अत्यधिक महत्व है। "तुमो योग" (आंतरिक गर्मी का योग) और "फोवा" (चेतना का स्थानांतरण) इसके प्रमुख अभ्यास हैं। वर्तमान में 17वें कर्मापा के नेतृत्व में यह परंपरा जारी है। कग्यूपा मठ ध्यान, योग, और तांत्रिक अभ्यासों के केंद्र हैं। तिब्बत, भारत, नेपाल, और भूटान में इसके प्रमुख मठ स्थित हैं।

4. गेलुग पंथ:

यह पंथ तिब्बती बौद्ध धर्म का सबसे युवा और संगठित पंथ है, जिसे अक्सर "पीली टोपी पंथ" के नाम से भी जाना जाता है। यह पंथ 14वीं सदी के अंत और 15वीं सदी की शुरुआत में स्थापित हुआ। गेलुग पंथ अनुशासन, नैतिकता, और दार्शनिक अध्ययन पर विशेष जोर देने के लिए प्रसिद्ध है। इस पंथ के प्रमुख नेता दलाई लामा हैं, जो विश्व स्तर पर बौद्ध धर्म और शांति के प्रतीक माने जाते हैं।[4]

इस पंथ की स्थापना जे चोंखापा लोसे सांगपो (1357–1419) ने की। चोंखापा एक महान विद्वान और सुधारक थे, जिन्होंने तिब्बती बौद्ध धर्म में नैतिक अनुशासन, शिक्षाओं की स्पष्टता, और मठीय अनुशासन को पुनर्जीवित किया। गेलुग पंथ एक सुधार आंदोलन के रूप में शुरू हुआ, जिसने ध्यान और योग के साथ नैतिक अनुशासन और बौद्धिक अध्ययन को संतुलित किया। साथ ही, इसने तांत्रिक प्रथाओं को अधिक संरचित और अनुशासित रूप दिया।[5]

16वीं सदी में तीसरे दलाई लामा (सोनाम ग्यात्सो) को मंगोल शासक अल्तान खान द्वारा "दलाई लामा" की उपाधि दी गई। इसके बाद, दलाई लामा गेलुग पंथ और तिब्बत के धार्मिक और राजनीतिक नेता बन गए।

गेलुग पंथ मध्यमक-प्रसंगिका (नागार्जुन की शिक्षाओं पर आधारित दर्शन) को अपनाता है। इसका मुख्य उद्देश्य बोधिचित्त (बोधि मन) और प्रज्ञा (बुद्धि) के माध्यम से आत्मज्ञान प्राप्त करना है। यह पंथ विनय (नैतिक अनुशासन) और शिक्षा के कठोर पालन पर जोर देता है। यह भिक्षुओं और लामा के लिए अनुशासन की सख्त परंपराओं को लागू करता है।

तांत्रिक अभ्यास इस पंथ का एक हिस्सा है, लेकिन इसे व्यवस्थित और संयमित रूप से किया जाता है। गेलुग पंथ "गुह्यसमाज तंत्र" और "कल्पवृद्धि तंत्र" पर विशेष जोर देता है। इस पंथ ने तिब्बती बौद्ध शिक्षा प्रणाली को औपचारिक रूप दिया। बौद्ध मठों में दर्शन, तंत्र, और विनय के गहन अध्ययन के लिए लामाओं को प्रशिक्षित किया जाता है। इस पंथ में द्वारा "गेशे" (बौद्ध धर्म में विद्वानों की उपाधि) की परंपरा शुरू की गई।[6]

गेलुग पंथ के सर्वोच्च नेता दलाई लामा होते हैं। इसके अलावा, गेलुग पंथ के प्रमुख मठों के प्रमुख भी धार्मिक और प्रशासनिक भूमिकाएं निभाते हैं। इस पंथ के प्रमुख मठों में गंदेन मठ शामिल हैं जो इस पंथ का मुख्यालय है, जिसकी स्थापना स्वयं जे चोंखापा ने की थी। द्रेपुंग मठ भी इसी पंथ से संबंधित है यह तिब्बत में सबसे बड़ा मठ है। सेरा मठ दर्शन और तर्कशास्त्र के अध्ययन के लिए प्रसिद्ध है। ताशिलहुनपो मठ, पैंचेन लामा का मुख्यालय है।

गेलुग पंथ ने 17वीं सदी में तिब्बत का धार्मिक और राजनीतिक नियंत्रण प्राप्त किया था। 5वें दलाई लामा (1617–1682) ने तिब्बत को एकीकृत किया और गेलुग पंथ को इस क्षेत्र का प्रमुख पंथ बनाया था। गेलुग पंथ ने तिब्बत से बाहर भी बौद्ध धर्म का प्रचार किया और इसे विश्व स्तर पर फैलाया। वर्तमान में, दलाई लामा विश्व स्तर पर बौद्ध धर्म और शांति के प्रतीक हैं। गेलुग पंथ ने तिब्बती बौद्ध धर्म की दार्शनिक परंपराओं को संरक्षित किया और इसे व्यवस्थित रूप प्रदान किया। इसकी शिक्षा प्रणाली ने विद्वानों और साधकों को प्रशिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।[7]

इसके प्रमुख मठों में तिब्बत में गंदेन, सेरा, और ड्रेपुंग मठ गेलुग पंथ के प्रमुख स्थल हैं और भारत में धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में दलाई लामा का मुख्यालय और नामग्याल मठ स्थित है। दक्षिण भारत में कर्नाटक के बायलाकुप्पे और मुंडगोड में भी मठ पुनर्स्थापित किए गए हैं। गेलुग पंथ ने तिब्बती बौद्ध धर्म को न केवल संरक्षित किया बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा भी दिलाई। इसकी शिक्षाएँ अनुशासन, नैतिकता, और तर्क आधारित अध्ययन पर आधारित हैं। वर्तमान में दलाई लामा के नेतृत्व और मार्गदर्शन में यह पंथ विश्व भर में शांति और करुणा का संदेश प्रसारित कर रहा है।

दलाई लामा की परंपरा और भूमिका:

दलाई लामा तिब्बती बौद्ध धर्म के गेलुग पंथ के सर्वोच्च लामा माने जाते हैं। यह परंपरा पुनर्जन्म (तुल्कु) की अवधारणा पर आधारित है, जिसके अनुसार प्रत्येक दलाई लामा अपने पूर्ववर्ती का पुनर्जन्म होते हैं।

दलाई लामा की उत्पत्ति:

दलाई लामा नाम 1578 ईस्वी में बनाया गया था, उस वर्ष, सोनम ग्यात्सो को तुमेद मंगोलों के नेता अंडा (अल्तान खान) ने बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने के लिए मंगोल क्षेत्र में आमंत्रित किया था। किंघई में यांगहुआ मठ में, सोनम ग्यात्सो ने तिब्बती बौद्ध धर्म के सिद्धांतों की व्यापक व्याख्या की, जिससे मंगोल नेता उनकी प्रशंसा करने लगे और उन्हें "पवित्र चेतना सभी वज़ीर दलाई लामा" की उपाधि दी।[8]

17वीं सदी से लेकर 20वीं सदी के मध्य तक, दलाई लामा, अक्सर शक्तिशाली मंगोलियाई संरक्षकों के समर्थन से, तिब्बत में महत्वपूर्ण राजनीतिक अधिकार रखते थे। उन्होंने गैंडेन फोडरंग सरकार का नेतृत्व किया, जिसने अलग-अलग स्वायत्तता के साथ अधिकांश तिब्बती पठार पर शासन किया। इस अवधि में ल्हासा में पोटाला पैलेस का निर्माण भी देखा गया, जो दलाई लामाओं की सीट के रूप में कार्य करता था। प्रथम दलाई लामा गेदुन द्रुब थे, जिन्हें 15वीं सदी में इस पद पर प्रतिष्ठित किया गया। 17वीं सदी में पाँचवें दलाई लामा

[4] हाज़रा, के. एल. (2012). लामाइज्म ऑफ़ तिब्बत एंड दी दलाई लामाज, पृ.14-35.
[5] हाज़रा, के. एल., पृ.14-35.
[6] वही, पृ.14-35.
[7] अनुरुद्धा, आर. पी. (1959). एन इंट्रोडक्शन इनटू लामाइज्म: दी मिस्टिकल बुद्धिज्म, पृ.44-46.
[8] हाज़रा, के. एल. (2012). लामाइज्म ऑफ़ तिब्बत एंड दी दलाई लामाज, पृ.1-77.

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

(लोसान ग्यात्सो) ने तिब्बत को एकीकृत किया और धार्मिक तथा राजनीतिक नेतृत्व संभाला। वर्तमान में (14वें) दलाई लामा, तेनजिन ग्यात्सो, 1935 में जन्मे और उन्हें 1940 में दलाई लामा घोषित किया गया। 1959 में चीन के तिब्बत पर कब्जे के बाद वे निर्वासन में भारत आ गए।[9] वर्तमान में दलाई लामा तिब्बती संस्कृति, धर्म, और मानवाधिकारों के लिए वैश्विक स्तर पर कार्य कर रहे हैं।

दलाई लामा की खोज:

एक आध्यात्मिक नेता रूप में और तिब्बती बौद्ध परंपरा के प्रमुख दलाई लामा न केवल एक धार्मिक व्यक्ति हैं बल्कि एक राजनीतिक और सांस्कृतिक नेता भी हैं। दलाई लामा का कभी चुनाव नहीं होता है बल्कि उन्हें खोजा जाता है। बौद्ध धर्म के अनुयायी दलाई लामा को अपने भगवान के रूप में देखते हैं। दलाई लामा तिब्बती बौद्धों के अध्यात्मिक, धार्मिक और राजनीतिक गुरु होते हैं।

तिब्बत में दलाई लामा की खोज की एक बहुत ही गौरवशाली परम्परा रही है। तिब्बती समुदाय के अनुसार लामा, 'गुरु' शब्द का मूल रूप है। एक ऐसा गुरु जो सभी का मार्गदर्शन करता है। दलाई लामा के चयन की प्रक्रिया में पिछले दलाई लामा के पुनर्जन्म की खोज शामिल है, जिसे 'स्वर्ण कलश' प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है। तिब्बतियों का मानना है कि दलाई लामा कभी इस धरती को छोड़कर नहीं जाते है और केवल एक शरीर छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश लेते हैं। इसलिए अपनी मृत्यु से पहले ही जाने वाले दलाई लामा अपने नजदीकियों को अपने पुनर्जन्म के संकेत देते रहते हैं। इसके अलावा, जिस तरह दलाई लामा के शरीर का अंतिम संस्कार किया जाता है। उस समय भी उनकी चिता के धुंए को ईशारे के रूप में लिया जाता है। जिसके बाद एक उच्च लामाओं के नेतृत्व में एक टीम उनकी उनकी मृत्यु के आस-पास जन्मे बच्चों में दलाई लामा को खोजने निकल जाती है। कभी-कभी इस प्रक्रिया में कई साल भी लग जाते है।[10] इस खोज के दौरान लामा का दल मार्गदर्शन के रूप में कई चिन्हों व भविष्यवाणियों के साथ दलाई लामा के स्वयं के लेखन व संकेतों को ध्यान में रखते हैं। जब उन्हें ऐसे किसी बच्चे का पता लगता है जो उनके मिले संकेतों में फिट बैठता है तो वह इसकी जानकारी तिब्बती सरकार को दे देते हैं। कई बार एक से अधिक एक बच्चे मिल जाते हैं जिसके बाद एक निश्चित परीक्षा के बाद असली दलाई लामा को खोजा जाता है। बच्चे को अन्य चीजों के साथ दलाई लामा से जुड़ी स्मृतियां दिखाई जाती है और उसकी पूर्व की याददाश्त को परखा जाता है। जब लामा पूरी तरह संतुष्ट हो जाते हैं कि यह यह दलाई लामा का ही वंशज तब उस बच्चे को बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जाती है।[11]

लामा की भूमिका:

लामा न केवल धार्मिक नेता होते हैं, बल्कि वे समाज के विभिन्न पहलुओं में भी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। उनकी प्रमुख भूमिका इस प्रकार हैं:[12]-

1. आध्यात्मिक मार्गदर्शन:

लामा तिब्बती बौद्ध धर्म में एक उच्च आध्यात्मिक गुरु और शिक्षक होते हैं। वे न केवल धार्मिक शिक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि अपने अनुयायियों का मार्गदर्शन भी करते हैं। तिब्बती बौद्ध धर्म में लामा का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे ध्यान, करुणा, और आध्यात्मिक साधना के माध्यम से समाज का कल्याण करते हैं। इस प्रकार लामा केवल धार्मिक शिक्षक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक मार्गदर्शक, शांति दूत, और समाज सुधारक भी होते हैं। वे ध्यान, करुणा और बौद्ध शिक्षाओं के माध्यम से मानवता की सेवा करते हैं। लामा अपने अनुयायियों को ध्यान, साधना, और तांत्रिक विधियों का मार्गदर्शन देते हैं।

2. धर्म का प्रचार और शिक्षा:

वे धार्मिक ग्रंथों और बौद्ध सिद्धांतों का अध्ययन और शिक्षण करते हैं। लामा तिब्बती बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाते हैं। लामा केवल धार्मिक अनुष्ठान कराने वाले व्यक्ति नहीं होते, बल्कि वे एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक, ध्यान शिक्षक और तांत्रिक साधक भी होते हैं। इसके साथ-साथ वे अपने धर्म के प्रचार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

3. सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान:

लामा तिब्बती बौद्ध धर्म के आध्यात्मिक गुरु और शिक्षक होते हैं, जो समाज को न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन देते हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। लामाओं ने इतिहास में समाज सुधार, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, शांति स्थापना और कला-संस्कृति के विकास में अहम भूमिका निभाई है। तिब्बत, भूटान, नेपाल और भारत समेत पूरी दुनिया में उनके योगदान को व्यापक रूप से सराहा जाता है।

लामा न केवल आध्यात्मिक बल्कि सामाजिक सुधारों में भी भाग लेते हैं बल्कि वे शिक्षा, स्वास्थ्य, और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर कार्य करते हैं। उन्होंने कई शरणार्थियों और विस्थापित तिब्बतियों को सहायता प्रदान की है। लामा अक्सर विभिन्न धर्मों, समुदायों और संस्कृतियों के बीच शांति और सद्भाव फैलाने का कार्य करते हैं। 14वें दलाई लामा ने वैश्विक शांति, अहिंसा और करुणा का संदेश फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।14वें दलाई लामा को शांति, करुणा और अहिंसा के प्रचार के लिए 1989 में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। लामाओं ने समाज में हिंसा, युद्ध और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई और मध्य मार्ग अपनाने का संदेश सम्पूर्ण विश्व को दिया ताकि सभी लोग शांति और सद्भाव से रह सके। वे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जाकर शांति वार्ता, मानवाधिकारों की रक्षा और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देते हैं।

4. तांत्रिक साधना:

लामा तिब्बती बौद्ध धर्म के उच्च प्रशिक्षित साधक और शिक्षक होते हैं, जो न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, बल्कि विशेष रूप से तांत्रिक साधना में भी अपना योगदान देते हैं। तिब्बती बौद्ध धर्म में तंत्र को बुद्ध के विशेष शिक्षण के रूप में माना जाता है, जिसमें लामा ध्यान, मंत्र, यंत्र, मुद्राओं और विशेष अनुष्ठानों के माध्यम से साधना करते हैं।

[9] हाज़रा, के. एल., पृ.98-111.
[10] वही, पृ.1-77.
[11] हाज़रा, के. एल. (2012). पृ.1-77.
[12] वाडेल, एल. ऑस्टिन. (1985). बुद्धिस्म एंड लामाइज्म ऑफ़ तिब्बत पृ.212-225.

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

लामाओं की तांत्रिक साधना का उद्देश्य आत्मज्ञान प्राप्त करना, शारीरिक और मानसिक ऊर्जा को संतुलित करना तथा करुणा और ज्ञान के माध्यम से बोधिसत्व के मार्ग पर अग्रसर होना है। लामाओं ने तिब्बती बौद्ध धर्म की विभिन्न परंपराओं में तांत्रिक विधियों को संरक्षित और विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

तिब्बत में लामा परंपरा का प्रभाव:

तिब्बती समाज में लामा परंपरा का प्रभाव गहरा और बहुआयामी है। यह न केवल धार्मिक क्षेत्र में बल्कि राजनीति, कला, और संस्कृति में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है जो निम्न प्रकार है:[13]-

धार्मिक प्रभाव:

तिब्बती बौद्ध धर्म की जटिल शिक्षाओं को संरक्षित और प्रचारित करने में लामाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तांत्रिक परंपराओं और ध्यान विधियों का विकास इसी परंपरा की देन है। लामा परंपरा तिब्बत में बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। तिब्बती समाज में लामाओं को न केवल आध्यात्मिक गुरु बल्कि सामाजिक और राजनीतिक मार्गदर्शक के रूप में भी देखा जाता है। तिब्बत में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भारत से हुई, जिसे गुरु पद्मसंभव (8वीं शताब्दी) ने स्थापित किया और धीरे-धीरे यह वज्रयान (तांत्रिक बौद्ध धर्म) के रूप में विकसित हुआ। तिब्बत में लामाओं का धार्मिक प्रभाव अत्यधिक व्यापक है और यह उनकी शिक्षाओं, अनुष्ठानों, ध्यान साधनाओं, और आध्यात्मिक नेतृत्व के माध्यम से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आधुनिक युग में, जब दुनिया अशांति और संघर्षों से गुजर रही है, तिब्बती लामाओं का संदेश शांति, ध्यान और आध्यात्मिकता का एक महत्वपूर्ण स्रोत बना हुआ है।

सामाजिक प्रभाव:

लामा परंपरा तिब्बती समाज की आधारशिला रही है, जिसने न केवल धार्मिक बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक जीवन को भी गहराई से प्रभावित किया है। लामाओं ने शिक्षा, नैतिकता, स्वास्थ्य, न्याय व्यवस्था, शांति और मानव सेवा जैसे क्षेत्रों में योगदान दिया है। तिब्बत में लामा परंपरा केवल आध्यात्मिक गुरु तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामाजिक संरचना और जनजीवन को दिशा देने में भी महत्वपूर्ण रही है। तिब्बती समाज में लामाओं को उच्च सम्मान प्राप्त है। वे समाज के संरक्षक, मार्गदर्शक, शिक्षक और नीति निर्धारक होते हैं। तिब्बत में लामाओं ने शिक्षा प्रणाली को विकसित किया और इसे जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया है। तिब्बती लामाओं ने मठवासी शिक्षा की स्थापना की, जिससे समाज में ज्ञान का प्रचार-प्रसार हुआ।

राजनीतिक प्रभाव:

तिब्बत में लामा परंपरा न केवल धार्मिक और सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग रही है, बल्कि यह राजनीतिक प्रणाली का भी एक प्रमुख घटक रही है। लामाओं ने सदियों तक तिब्बत की शासन व्यवस्था में केंद्रीय भूमिका निभाई, जिसमें विशेष रूप से दलाई लामा और पंचेन लामा जैसे उच्च पदस्थ लामाओं का शासनिक प्रभाव देखा गया। तिब्बत में धर्म और राजनीति का घनिष्ठ संबंध रहा है, जिसे 'चोसी न्युंद्रेल' (धर्म और राजनीति का संयुक्त प्रशासन) कहा जाता है।

तिब्बत में लामाओं के राजनीतिक प्रभाव को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि वहाँ थियोक्रेसी (धर्मशासन) की परंपरा रही है। यानी, शासन धार्मिक नेताओं द्वारा संचालित होता था। 1642 में 5वें दलाई लामा (लोबसांग ग्यात्सो) ने तिब्बत की सत्ता संभाली और बौद्ध धर्म के तहत राजनीतिक सत्ता की स्थापना की। दलाई लामा न केवल आध्यात्मिक प्रमुख बल्कि तिब्बत के राजनीतिक शासक भी बने। उन्होंने गेलुगपा परंपरा के तहत शासन किया, जो बौद्ध धर्म का एक प्रमुख संप्रदाय था। ल्हासा तिब्बत की राजधानी बनी और वहाँ से प्रशासन संचालित किया गया।

इसी प्रकार पंचेन लामा को दलाई लामा का सहायक माना जाता था और वे धार्मिक व राजनीतिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। पंचेन लामा ने शिक्षा, न्याय और बौद्ध धर्म के प्रचार में सहयोग दिया। दलाई लामा और पंचेन लामा के बीच सत्ता संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया गया।

तिब्बत में मठ (मोनास्ट्री) न केवल आध्यात्मिक साधना के केंद्र थे, बल्कि वे राजनीतिक प्रशासन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। तिब्बती समाज में मठों को सत्ता और प्रशासनिक कार्यों का केंद्र बनाया गया। गदेन, सेरा, द्रेपुंग और ताशील्हुंपो जैसे प्रमुख मठों ने प्रशासनिक कार्यों का संचालन किया। मठों के प्रमुख (अभिधर्म गुरु) ने न्यायिक और कानूनी मामलों को संचालित किया। युद्ध और कूटनीति से जुड़े फैसले भी मठों के वरिष्ठ लामाओं द्वारा लिए जाते थे। 13वीं शताब्दी में मंगोल शासक कुबलाई खान ने साक्यापा पंथ के प्रमुख को तिब्बत का धार्मिक और राजनीतिक शासक घोषित किया। इस व्यवस्था को 'चो-योन' (धर्म-संरक्षक संबंध) कहा गया, जिसमें मंगोल शासक तिब्बत की रक्षा करते थे और तिब्बती लामा आध्यात्मिक मार्गदर्शन देते थे। 17वीं शताब्दी में मांचू राजवंश ने तिब्बत पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए दलाई लामा को आधिकारिक मान्यता दी। 18वीं शताब्दी में चीन ने तिब्बत में अपने दो 'अंबान' (राजदूत) नियुक्त किए, जिनका कार्य तिब्बत में चीन के प्रभाव को बनाए रखना था।13वें दलाई लामा (थुबतेन ग्यात्सो) ने 1913 में तिब्बत को चीन से स्वतंत्र देश घोषित किया था। इससे तिब्बत में स्वतंत्र प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की गई। हालाँकि, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस स्वतंत्रता को मान्यता नहीं मिली।

1950 में चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया और 1951 में "17-सूत्रीय समझौते" के तहत तिब्बत को चीन का एक हिस्सा घोषित किया। इससे तिब्बती लामाओं को राजनीतिक रूप से हाशिए पर डालने की प्रक्रिया शुरू हुई। 1959 में ल्हासा विद्रोह हुआ, जिसमें हजारों तिब्बती मारे गए और 14वें दलाई लामा को भारत में शरण लेनी पड़ी थी। 1959 में दलाई लामा ने भारत के धर्मशाला में निर्वासित तिब्बती सरकार की स्थापना की। उन्होंने तिब्बत की स्वतंत्रता और तिब्बती संस्कृति के संरक्षण के लिए आंदोलन चलाया। उन्होंने अहिंसा और वैश्विक शांति का संदेश दिया और तिब्बत की स्वायत्तता की माँग की। 1965 में चीन ने तिब्बत को एक स्वायत्त क्षेत्र घोषित किया। 1970 और 1980 के दशक में चीन ने तिब्बत में धार्मिक स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाए और मठों को बंद कर दिया। 11वें पंचेन लामा (गेदुन चोक्यी निमा) को चीन ने 1995 में हिरासत में ले लिया और आज तक

[13] अनुरुद्धा, आर. पी. (1959). एन इंट्रोडक्शन इनटू लामाइज्म: दी मिस्टिकल बुद्धिज्म, पृ.90-108.

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

उनका कोई पता नहीं चला। 14वें दलाई लामा (तेनजिन ग्यात्सो) ने तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन को अहिंसक रूप में आगे बढ़ाया और यह वर्तमान में भी जारी है। वे संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर तिब्बती अधिकारों की वकालत करते हैं। 1989 में उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2011 में 14वें दलाई लामा ने राजनीतिक नेतृत्व से स्वयं को अलग कर दिया और निर्वाचित प्रधानमंत्री (सिक्योंग) को सत्ता सौंप दी। अब तिब्बत की निर्वासित सरकार लोकतांत्रिक तरीके से चुनी जाती है।

इस तरह, तिब्बत में लामा परंपरा का राजनीतिक प्रभाव अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। लामाओं ने सदियों तक तिब्बत पर शासन किया और समाज को धर्म के साथ-साथ राजनीतिक दिशा भी दी। हालांकि, चीन के अधिग्रहण के बाद तिब्बत की राजनीतिक संरचना बदल गई, लेकिन दलाई लामा और निर्वासित तिब्बती समुदाय आज भी अपनी संस्कृति, धार्मिक पहचान और राजनीतिक स्वायत्तता की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

समकालीन परिप्रेक्ष्य:

आज के वैश्वीकरण के युग में तिब्बती लामा परंपरा विश्वभर में प्रसारित हो चुकी है। दलाई लामा जैसे व्यक्तित्वों ने इसे अंतर्राष्ट्रीय मंच पर लोकप्रिय बनाया है। आधुनिक युग में लामा परंपरा के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:[14]-

1. विश्व स्तर पर धर्म का प्रसार:

तिब्बती लामा विभिन्न देशों में बौद्ध धर्म और तिब्बती संस्कृति का प्रचार कर रहे हैं। दलाई लामा ने शांति, सहिष्णुता, और अहिंसा के संदेश को वैश्विक मान्यता दिलाई है।

2. निर्वासन में तिब्बती समुदाय:

चीन के तिब्बत पर कब्जे के बाद, लामा परंपरा निर्वासन में भी जीवित और सक्रिय है। धर्मशाला (भारत) तिब्बती लामा परंपरा का प्रमुख केंद्र बन गया है।

3. आधुनिक समाज पर प्रभाव:

तिब्बती बौद्ध धर्म के ध्यान और योग पद्धतियों ने आधुनिक समाज में मानसिक शांति और आत्म-विकास के साधन के रूप में लोकप्रियता प्राप्त की है। तिब्बत की लामा परंपरा न केवल बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, बल्कि यह तिब्बती समाज की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आत्मा का प्रतीक भी है। यह परंपरा ध्यान, साधना, और नैतिकता के माध्यम से मानवता को करुणा, शांति, और सह-अस्तित्व का संदेश देती है। आधुनिक युग में लामा परंपरा ने तिब्बत की सीमाओं को पार कर वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

दलाई लामा और अन्य तिब्बती लामाओं के नेतृत्व में यह परंपरा आज भी जीवंत है और दुनिया भर में लोगों को प्रेरणा दे रही है। तिब्बती लामा परंपरा मानवता के लिए शाश्वत शांति और करुणा का संदेश लेकर आई है, जो आने वाले युगों में भी प्रासंगिक बनी रहेगी।

लामा परम्परा का राजनीतिक परिप्रेक्ष्य:

तिब्बत की लामा परंपरा का तिब्बती समाज और राजनीति में एक गहन और अद्वितीय स्थान है। यह परंपरा बौद्ध धर्म के महायान और वज्रयान शाखाओं के तहत विकसित हुई और तिब्बती संस्कृति की पहचान बन गई। इसके माध्यम से न केवल आध्यात्मिक और धार्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया गया, बल्कि राजनीतिक शक्ति और सामाजिक व्यवस्था में भी इसका व्यापक प्रभाव देखा गया। यह परम्परा आज भी जीवित है जो अपने राजनीतिक लक्ष्यों को पाने के लिए संघर्ष कर रही है।

लामा परंपरा का उद्भव और विकास:

तिब्बत में बौद्ध धर्म की स्थापना 7वीं सदी में राजा सोंगस्टन गम्पो के शासनकाल के दौरान हुई। उन्होंने भारतीय विद्वानों और तंत्रमार्गी गुरुओं को तिब्बत आमंत्रित किया, जिन्होंने लामा परंपरा की नींव रखी। लामा, जो बौद्ध धर्म के शिक्षक और साधक होते हैं, ने तिब्बती समाज में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक नेता की भूमिका निभाई। धीरे-धीरे, इनका प्रभाव राजनीति में भी बढ़ने लगा।[15] 15वीं सदी में त्सोंगखा पा द्वारा गैलुक परंपरा की स्थापना हुई, जो तिब्बत में लामा परंपरा के राजनीतिक प्रभाव का मुख्य आधार बनी। गैलुक परंपरा ने दलाई लामा की संस्था को जन्म दिया, जो धार्मिक और राजनीतिक दोनों ही क्षेत्रों में तिब्बत का नेतृत्व करती रही।

दलाई लामा और तिब्बत की राजनीति:

दलाई लामा की पदवी तिब्बत में धार्मिक और राजनीतिक नेतृत्व की प्रतीक है। 5वें दलाई लामा, नगावांग लोबसांग ग्यात्सो (1617-1682), ने तिब्बत को एकीकृत कर इसे एक धर्मराज्य के रूप में स्थापित किया। उन्होंने मंगोल शासक गुश्री खान के समर्थन से तिब्बत की राजनीतिक सत्ता को धार्मिक सत्ता के अधीन लाने का प्रयास किया।[16] दलाई लामा न केवल धार्मिक नेता थे, बल्कि उन्होंने तिब्बत के सामाजिक और राजनीतिक ढांचे को भी नियंत्रित किया। 17वीं सदी से 20वीं सदी तक, तिब्बत की सरकार एक धर्मतांत्रिक व्यवस्था थी, जिसमें लामा परंपरा के मठ और धार्मिक संस्थाएं प्रशासन का संचालन करती थीं। यह व्यवस्था तिब्बत में स्थायित्व और सामाजिक सामंजस्य बनाए रखने में सहायक रही।

मठों की राजनीतिक भूमिका:

तिब्बत में मठों (गोम्पा) का राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव अत्यधिक था। मठ न केवल धार्मिक शिक्षा और साधना के केंद्र थे, बल्कि तिब्बत के आर्थिक संसाधनों और भूमि का भी प्रबंधन करते थे। मठों के पास विशाल भूमि और संसाधन थे, जिसके कारण उनका सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव व्यापक था। वे स्थानीय प्रशासन, न्याय व्यवस्था, और कर संग्रहण में भी शामिल थे। इसके

[14] श्रीवास्तव, प्रेम शंकर. (2023). दी सेक्ट्स ऑफ़ तिब्बतन बुद्धिज़्म: यूनिटी इन डाइवर्सिटी. श्री नालंदा, वॉल्यूम-2, इश्यू-1, मई, पृ.18-36.

[15] कोलस, अशील्ड. (1996). तिब्बतन नेशनलिज्म: दी पॉलिटिक्स ऑफ़ रिलिजन. जर्नल ऑफ़ पीस रिसर्च, वॉल्यूम-33, न.-1, फरवरी, पृ.51-66.

[16] बाओगँग, ही एंड सौतमन, बेरी. (2005). दी पॉलिटिक्स ऑफ़ दलाई लामाज: न्यू इनिशिएटिव फॉर ऑटोनोमी. पैसिफिक अफेयर्स, वॉल्यूम-78, न.-04, पृ.601-629.

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परिणामस्वरूप, मठीय संस्थाओं ने तिब्बत के ग्रामीण क्षेत्रों में शक्तिशाली सामंती व्यवस्था को बनाए रखा।[17]

चीनी हस्तक्षेप और लामा परंपरा:
1950 में चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जा करने के बाद, लामा परंपरा की राजनीतिक भूमिका पर गहरा प्रभाव पड़ा। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने तिब्बत की स्वायत्तता को समाप्त कर इसे अपने प्रशासन के अधीन कर लिया। इसके परिणामस्वरूप, दलाई लामा को 1959 में भारत में शरण लेनी पड़ी।[18] दलाई लामा तिब्बती बौद्ध धर्म के सबसे प्रमुख आध्यात्मिक नेता और तिब्बत के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक प्रतीक माने जाते हैं। दलाई लामा तिब्बती बौद्ध धर्म के "गेलुगपा" संप्रदाय के सर्वोच्च नेता हैं। उन्हें बोधिसत्व अवलोकितेश्वर का अवतार माना जाता है। दलाई लामा का पद 15वीं शताब्दी में स्थापित हुआ और तब से यह तिब्बती समाज में एक गहरी आध्यात्मिक और राजनीतिक भूमिका निभाता आया है।[19] ऐतिहासिक रूप से, दलाई लामा तिब्बत के शासक और आध्यात्मिक प्रमुख दोनों थे। 17वीं शताब्दी में पांचवें दलाई लामा के समय, यह भूमिका औपचारिक रूप से स्थापित हुई। 1950 तक, दलाई लामा तिब्बत के पूर्ण धार्मिक और राजनीतिक शासक माने जाते थे।

तिब्बत और चीन का संघर्ष:
तिब्बत और चीन का संघर्ष ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जड़ों से उपजा है। यह विवाद तिब्बत की स्वायत्तता, चीन के आधिपत्य और तिब्बती पहचान के संरक्षण के मुद्दों के इर्द-गिर्द घूमता है। इस संघर्ष का मुख्य केंद्र तिब्बत की ऐतिहासिक स्वतंत्रता और आधुनिक काल में चीन के कब्जे के बाद उत्पन्न विवाद है। तिब्बत प्राचीन काल से एक स्वतंत्र क्षेत्र था। 7वीं से 9वीं शताब्दी तक, तिब्बत एक मजबूत साम्राज्य था। धीरे-धीरे, यह बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केंद्र बन गया।[20] चीन का दावा है कि तिब्बत 13वीं शताब्दी से मंगोल साम्राज्य के समय से उसका हिस्सा है। मिंग और छिंग राजवंश के दौरान तिब्बत ने चीन के साथ सांकेतिक संबंध बनाए रखे, लेकिन यह स्वायत्त रूप से शासित होता रहा। 1912 में छिंग साम्राज्य के पतन के बाद, तिब्बत ने खुद को स्वतंत्र घोषित किया और अगले चार दशकों तक स्वतंत्र रूप से शासन किया। इस दौरान तिब्बत का प्रशासन दलाई लामा के नेतृत्व में चला। 1950 में चीन ने तिब्बत पर कब्ज़ा कर लिया और इसे "पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ़ चाइना" का हिस्सा घोषित किया। तिब्बत की स्वायत्तता को नकारते हुए इसे सैन्य बल से नियंत्रित किया गया।[21]

1959 का विद्रोह और निर्वासन:
1959 में तिब्बत में चीन के खिलाफ बड़े पैमाने पर विद्रोह हुआ, जिसे चीनी सेना ने दबा दिया। इसके बाद, 14वें दलाई लामा को भारत में निर्वासन लेना पड़ा। तब से दलाई लामा धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में रहते हैं, जहाँ उन्होंने तिब्बत की निर्वासित सरकार स्थापित की।[22] दलाई लामा और उनके समर्थकों ने "मध्य मार्ग दृष्टिकोण" अपनाया है, जिसमें तिब्बत की स्वतंत्रता की जगह उसकी सांस्कृतिक और धार्मिक स्वायत्तता की मांग की जाती है। हालांकि, चीन इस मांग को भी स्वीकार करने से इंकार करता है। दलाई लामा ने निर्वासन में एक लोकतांत्रिक तंत्र स्थापित किया। 2011 में, उन्होंने औपचारिक रूप से अपनी राजनीतिक शक्ति निर्वासित सरकार को सौंप दी। तिब्बत की निर्वासित सरकार का नेतृत्व अब निर्वाचित प्रधानमंत्री (सिक्योंग) करते हैं।[23]

वैश्विक परिप्रेक्ष्य:
दलाई लामा को दुनिया भर में शांतिवादी नेता के रूप में सम्मान मिलता है। उन्होंने 1989 में नोबेल शांति पुरस्कार जीता। कई देशों में तिब्बत के प्रति समर्थन है, लेकिन चीन के आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव के कारण कई सरकारें खुलकर तिब्बत का समर्थन करने से बचती हैं। निर्वासन में दलाई लामा ने तिब्बत की स्वतंत्रता और सांस्कृतिक पहचान की रक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच पर सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने तिब्बती सरकार-इन-एक्ज़ाइल की स्थापना की और तिब्बत के लिए "मध्य मार्ग" दृष्टिकोण अपनाया, जो चीन के साथ शांतिपूर्ण समाधान खोजने पर आधारित है।[24]
दलाई लामा तिब्बत के संघर्ष का प्रतीक हैं, और उनका नेतृत्व तिब्बती समाज को आशा और प्रेरणा देता है। तिब्बत की राजनीति और संस्कृति के भविष्य में उनका योगदान सदैव महत्वपूर्ण रहेगा।

निष्कर्ष
तिब्बत की लामा परंपरा न केवल एक धार्मिक परंपरा है, बल्कि यह तिब्बती समाज और राजनीति का अभिन्न अंग भी रही है। प्राचीन काल से लेकर समकालीन युग तक, इस परंपरा ने तिब्बत की सांस्कृतिक और राजनीतिक संरचना को आकार दिया है। यद्यपि चीनी हस्तक्षेप के कारण इस परंपरा की राजनीतिक भूमिका सीमित हो गई है, लेकिन इसका आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव आज भी व्यापक है। लामा परंपरा तिब्बती पहचान की प्रतीक है और इसे संरक्षित करने के प्रयास निरंतर जारी हैं। तिब्बती संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण के लिए वैश्विक स्तर पर समर्थन बढ़ाने की आवश्यकता है। भारत, अमेरिका और अन्य देशों को तिब्बत के आत्मनिर्णय के अधिकार को बनाए रखने के लिए कूटनीतिक प्रयास करने चाहिए।

[17] लिक्सियोंग, वांग. (2002). रिफ्लेक्शंस ऑन तिब्बत. न्यू लेफ्ट रिव्यू, वॉल्यूम-14, मार्च-अप्रेल, पृ.79-111.
[18] आकाश, अभिनय. (2020). तिब्बत, चीन और दलाई लामा के त्रिकोण का विश्लेषण. प्रभासाक्षी, 22 जुलाई.
[19] वही, आकाश, अभिनय.
[20] थिनली, वांगचुक. (2020). अनहर्ड वॉइसेस इन दी ट्रांस-हिमालयन पॉलिटिक्स-तिब्बतन रिइनकार्नेशन एंड लार्जर पॉलिटिकल गोल ऑफ़ सीसीपी. युशूस-जर्नल ऑफ़ बिज़नेस मैनेजमेंट, वॉल्यूम-19, न.-2, पृ.49-67.
[21] शाकाब्पा, डब्ल्यू. डी. (1967). तिब्बत: अ पॉलिटिकल हिस्ट्री. पृ.56-68.
[22] डेल्टन, जैकब पी. (2011). दी टेमिंग ऑफ़ दी डेमन्स: वायलेंस एंड लिबरेशन इन तिब्बतन बुद्धिज्म, पृ.112-125.
[23] कुजमिन, एस. एल. (2010). हिडन तिब्बत: हिस्ट्री ऑफ़ इंडिपेंडेंस एंड ऑक्युपेशन, पृ.102-118.
[24] दावा, नोरबू. (1997). तिब्बत: दी रोड अहेड. दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स, पृ.85-97.

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अनुरुद्धा RP. एन इंट्रोडक्शन इनटू लामाइज्म: दी मिस्टिकल बुद्धिज्म. होशियारपुर: विश्वेश्रानंदा वैदिक रिसर्च इंस्टिट्यूट; 1959.
2. बाओगैँग ह, सौतमन बेरी. दी पॉलिटिक्स ऑफ़ दलाई लामाज: न्यू इनिशिएटिव फॉर ऑटोनोमी. पैसिफिक अफेयर्स. 2005;78(4):601-629.
3. बेल चार्ल्स. पोर्ट्रेट ऑफ़ दलाई लामा: दी लाइफ एंड टाईम्स ऑफ़ दी ग्रेट थर्टीन्थ (1946). लंदन: विजडम पब्लिकेशंस; 1987.
4. बेल चार्ल्स. दी रिलिजन ऑफ़ तिब्बत. ऑक्सफ़ोर्ड: दी कलेरंडन प्रेस; 1968.
5. दावा नोरबू. तिब्बत: दी रोड अहेड. दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स; 1997.
6. क्लीजर क्रिस्टियन पी. दी इस्टीटूशन ऑफ़ दी दलाई लामा एज अ सिम्बॉलिक मैट्रिक्स. दी तिब्बत जर्नल. 1991;16(1):96-107.
7. डेल्टन जैकब पी. दी टेमिंग ऑफ़ दी डेमन्स: वायलेंस एंड लिबरेशन इन तिब्बतन बुद्धिज्म. लंदन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस; 2011.
8. गुडमैन माइकल हैरिस. दी लास्ट दलाई लामा: अ बायोग्राफी (1986). कलकत्ता: रूपा पेपरबैक; 1996.
9. हाज़रा केएल. लामाइज्म ऑफ़ तिब्बत एंड दी दलाई लामाज. दिल्ली: बी. आर. पब्लिशिंग हाउस; 2012.
10. कोलस अशील्ड. तिब्बतन नेशनलिज्म: दी पॉलिटिक्स ऑफ़ रिलिजन. जर्नल ऑफ़ पीस रिसर्च. 1996;33(1):51-66.
11. लिक्सियोंग वांग. रिफ्लेक्शंस ऑन तिब्बत. न्यू लेफ्ट रिव्यू. 2002;14:79-111.
12. मिल्स एम. आइडेंटिटी, रिचुअल एंड स्टेट इन तिब्बतन बुद्धिज्म. लंदन: राउतलेज; 2003.
13. मुलीन ग्लेन एच. दी फोर्टीन दलाई लामाज: अ सैक्रेड लिगेसी ऑफ़ रिइनकार्नेशन. न्यू मेक्सिको: क्लियर लाइट पब्लिशर्स; 2001. p.453-502.
14. शाकाब्पा डब्ल्यूडी. तिब्बत: अ पॉलिटिकल हिस्ट्री. न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस; 1967.
15. श्रीवास्तव प्रेम शंकर. दी सेक्ट्स ऑफ़ तिब्बतन बुद्धिज़्म: यूनिटी इन डाइवर्सिटी. श्री नालंदा. 2023;2(1):18-36.
16. स्मिथ वारेन डब्ल्यू. दी सर्वाइवल ऑफ़ तिब्बतन कल्चर. कल्चरल सर्वाइवल क्वाटर्ली. 2010;19 फरवरी.
17. वांग्याल फुंत्सोग. दी इन्फ्लुएंस ऑफ़ रिलीजन ऑन तिब्बतन पॉलिटिक्स. दी तिब्बत जर्नल. 1975;1(1):78-86.
18. वाडेल एल ऑस्टिन. बुद्धिस्म एंड लामाइज्म ऑफ़ तिब्बत. दिल्ली: गौरव पब्लिशिंग हाउस; 1985.
19. भारत भी बदले अपनी तिब्बत नीति, नया अमेरिकी कानून चीन की दादागीरी से राहत दिलाने वाला. दैनिक जागरण (संपादकीय), 17 जून 2024.
20. आहूजा उदयवीर. अमेरिका का कदम: कानूनी सुर्खियों में तिब्बत को लाना. ऑब्ज़र्वर रिसर्च फाउंडेशन. 2024;17 अगस्त.
21. चिनॉय सुजान आर. अमेरिका की तिब्बत नीति: सहानुभूति की लहर और डगमगाती प्रतिबद्धता. ऑब्ज़र्वर रिसर्च फाउंडेशन. 2024;16 सितंबर.
22. खोंड अनुराग. रिसॉल्व तिब्बत एक्ट: एन अपोर्चुन टाइम टू रिविजिट इंडियाज तिब्बत पॉलिसी. कश्मीर ऑब्ज़र्वर. 2024;29 जून.
23. विनीत टीके. तिब्बत इज बैक ऑन दी टेबल. इंडियन एक्सप्रेस. 2024;23 जून.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/